सर, मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि अभी महिलाओं के ऊपर अत्याचार की बात हो रही थी। हम रोज़ यह खबर पढ़ रहे हैं कि हर जगह यह अत्याचार हो रहा है। कहीं पर बलात्कार हो रहा है, कहीं पर उनको गाड़ियों से निकालकर उनके साथ अत्याचार किया जा रहा है। इस चीज़ को रोकना हमारी संसद के लिए बहुत जरूरी हो गया है, इसलिए मैं आपसे अनुरोध करती हूँ कि इसके ऊपर केवल lip-service न की जाए, बल्कि इसके ऊपर पूरा ध्यान दिया जाए। ये जो प्राइवेट स्कूल्स खुल रहे हैं, इनके बारे में मैं शिक्षा मंत्री जी से कहूँगी कि जो नई पॉलिसी बन रही है, उसमें भी वे इस बात का ध्यान रखें और इनके ऊपर एक अंकुश लगाया जाए, बहुत-बहुत धन्यवाद।

PROF. M.V. RAJEEV GOWDA (Karnataka): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI VIVEK K. TANKHA (Madhya Pradesh): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (Telangana): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI PALVAI GOVARDHAN REDDY (Telangana): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI D. BANDYOPADHYAY (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI AHAMED HASSAN (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI K.K. RAGESH (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार): सर, मैं भी इस विषय के साथ स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री नरेन्द्र बुढानिया (राजस्थान): सर, मैं भी इस विषय के साथ स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री पी.एल. पुनिया (उत्तर प्रदेश): सर, मैं भी इस विषय के साथ स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती झरना दास बैद्य (त्रिपुरा): सर, मैं भी इस विषय के साथ स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्री रणविजय सिंह जूदेव (छत्तीसगढ़): सर, मैं भी इस विषय के साथ स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

Concern over increase in food adulteration in the country

श्री मो. नदीमुल हक़ (पश्चिमी बंगाल): सर, मैं आज एक बहुत जरूरी सब्जेक्ट पर बात करना चाह रहा हूँ, जिसका शीर्षक है - Adulteration in Food. सर, पहले सब्जी घी में बनती थी, लेकिन अब घी भी सब्जी से बन रहा है। अभी दशहरा पूजा और दिवाली आने में ज्यादा समय नहीं है, दो-तीन

[श्री मो. नदीमुल हक़]

महीने के अंदर ही ये त्यौहार आने वाले हैं। जैसे ही त्यौहार का मौसम आता है, जितनी तरह की मिठाइयाँ हैं, वे सब बननी शुरू हो जाती हैं, लेकिन जितनी मिठाइयाँ बन रही हैं, उनके अंदर जो ingredients डाले जा रहे हैं, उन सबमें adulteration है। आप देखिए कि यूरिया से दूध बनाया जा रहा है, ताकि मिठाई बनाने में उसका उपयोग किया जा सके। अभी किसी भी मार्केट में आप चले जाइए, वहाँ जिस जगह पर मिठाई बनती है, वहाँ आपको सभी लोगों के हाथ अलग-अलग रंग के मिलेंगे, जैसे वे होली खेल रहे हों। वहाँ पर किसी का हाथ नीला है तो किसी का हाथ पीला है, यानी ये सारे रंग मिठाई में मिलाए जा रहे हैं। सर, ये रंग बहुत अच्छे स्टैंडर्ड के नहीं होते हैं, जिनसे आगे जाकर मौलिक बीमारियाँ भी हो सकती हैं। सर, अभी टीवी पर दिखाया जा रहा था कि एक ड्रम है, उसमें कच्चे केले को डुबाया जाता है और जब उसे निकाला जाता है, तो दूसरे दिन वह पक जाता है। सर, यह क्या हो रहा है? मैं कहना चाहता हूं कि आप सिगरेट की डिब्बी पर वॉर्निंग देते हो कि सिगरेट पीने से यह-यह बीमारी होती है, तो ऐसा खाने के सामान पर क्यों नहीं है? आप हर खाने पर भी वार्निंग दे दीजिए कि केले खाने से या मिठाइयां खाने से आपको कैंसर या ये-ये बीमारियां हो सकती हैं।

† **جناب محمد ندیم الحق (مغربی بنگال):** سر، میں آج ایک بہت ضروری سبجیکٹ پر بات کرنا چاہ رہا ہوں، جس کا موضوع ہے "Adulteration in Food." سر، پہلے سبزی گھی میں بنتی تھی، لیکن اب گھی بھی سبزی سے بن رہی ہے۔ ابھی دسہرا پوجا اور دیوالی آنے میں زیادہ وقت نہیں ہے، دو تین مہینے کے اندر ہی یہ تیوہار آنے والے ہیں۔ جیسے ہی تیوہار کا موسم آتا ہے، جتنی طرح کی مٹھائیاں ہیں، وہ سب بننی شروع ہوجاتی ہیں، لیکن جتنی مٹھائیاں بن رہی ہیں، ان کے اندر جو ingredients ڈالے جارہے ہیں، ان سب میں adulteration ہے۔ آپ دیکھیئے کہ یوریا سے دودھ بنایا جارہا ہے، تاکہ مٹھائی بنانے میں اس کا اُپیوگ کیا جاسکے۔ ابھی کسی بھی مارکیٹ میں آپ چلے جائیے، وہاں جس جگہ پر مٹھائی بنتی ہے، وہاں آپ کو سبھی لوگوں کے ہاتھ الگ الگ رنگ کے ملیں گے، جیسے وہ ہولی کھیل رہے ہوں۔ وہاں پر کسی کا ہاتھ نیلا ہے تو کسی کا ہاتھ پیلا ہے، یعنی یہ سارے رنگ مٹھائی میں ملائے جارہے ہیں۔ سر، یہ رنگ بہت اچھے اسٹینڈرڈ کے نہیں ہوتے ہیں، جن سے آگے جاکر مولک بیماریاں بھی ہوسکتی ہیں۔ سر، ابھی ٹی وی پر دکھایا جارہا تھا کہ ایک ڈرم ہے، اس میں کچے کیلے کو ڈوبایا جاتا ہے اور جب اسے نکالا جاتا ہے تو دوسرے دن وہ پک جاتا ہے۔

سر، یہ کیا ہورہا ہے؟ میں کہنا چاہتا ہوں کہ آپ سگریٹ کی ڈبی پر وارننگ دیتے ہیں کہ سگریٹ پینے سے یہ-یہ بیماریاں ہوتی ہیں، تو ایسا کھانے کے سامان پر کیوں نہیں ہے؟ آپ ہر کھانے پر بھی وارننگ دے دیجیئے کہ کیسے کھانے سے یا مٹھائیاں کھانے سے آپ کو کینسر یا یہ-یہ بیماریاں ہوسکتی ہیں۔

†Transliteration in Urdu script.

Sir, healthy people will lead to a healthy nation. जब nation healthy होगा, अभी ओलम्पिक में हमारा contingent गया है, वह मेडल भी जीतकर आएगा। Sir, another very important issue that I want to raise is this. इसके साथ-साथ, we all know this brand called Maggie. It was recently banned by many States for may reasons, but only the State of West Bengal gave it a clean chit after examining it. Later on, this ban was lifted. इसमें जो सबक हमें सीखना है, We need to be strict but we should not go on a witch-hunt, and genuine manufacturers should not be harassed.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; thank you. Shri K. K. Ragesh. ...*(Interruptions)*...

श्री मो. नदीमुल हक़: सर, मैंने अभी पूरा पढ़ा नहीं है। अभी मेरा टाइम बचा है।

†**جناب محمد ندیم الحق:** سر، میں نے ابھی پورا پڑھا نہیں ہے۔ ابھی میرا ٹائم بچا ہے۔

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You deviated to another subject.

SHRI MD. NADIMUL HAQUE: Sir, my time is left.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Then you became *. How can it be? ...*(Interruptions)*...

SHRI MD. NADIMUL HAQUE: Sir, as per the Annual Public Laboratory Testing Report for the year 2014-15, 17 per cent of the samples tested were adulterated. It is an increase of 2 to 3 per cent from the previous year. Whereas the conviction rate has gone down; from 3,175, it has gone down to 1,445. Sir, fine collected by the FSSAI has doubled. At the end, Sir, I would like to say that ...*(Interruptions)*... stringent and strict actions should be taken against people indulging in food adulteraion.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay; time over. Shri K. K. Ragesh you can associate. ...*(Interruptions)*... Just associate. ...*(Interruptions)*...

SHRI DEREK O'BRIEN: Sir, with all respects, you said that he has become*.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; I expunge that. Sorry, I expunge that. I agree with you. Thank you. That is expunged. It was an off-the-cuff remark.

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (Telangana): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

†Transliteration in Urdu script.

* Expunged as ordered by the Chair.

SHRI RIPUN BORA (Assam): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI C. P. NARAYANAN (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI D. BANDYOPADHYAY (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI AHAMED HASSAN (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

श्री रणविजय सिंह जूदेव (छत्तीसगढ़): सर, मैं भी माननीय सदस्य के वक्तव्य से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री विवेक के. तन्खा (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य के वक्तव्य से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य के वक्तव्य से स्वयं को संबद्ध करती हूँ।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य के वक्तव्य से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य के वक्तव्य से स्वयं को संबद्ध करता हूँ।

SHRI K. K. RAGESH (Kerala): Sir, while associating the hon. Member, last year, the Ministry ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no; only associate. There is no time for explaining.

SHRI K. K. RAGESH: Sir, I will make only two points, please. Last year, the Ministry of Agriculture conducted a study. In that study, it was revealed that 18.7 per cent of the total samples collected contained pesticide residues, that also in the vegetables and many other food items, which is very alarming. So, I am requesting the Central Government to immediately intervene and ensure safe food for the people of our country.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, that is very important.

SHRI K. K. RAGESH: And also, the Food Safety and Standards Authority of India has to immediately intervene. The Government should ensure that this particular

organisation functions. That is also very important. So, the Government must be concerned about hazardous food. I request the Government to ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, okay. That is very important. I think the Health Minister is also here. The point is, adulteration in food items is something you have to give special attention to. Kindly take note of it and take stringent action; ensure this.

Problems of Narmada dam oustees

श्री मधुसूदन मिस्त्री (गुजरात): सर, मैं आज आपके सामने एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय को उठा रहा हूं और वह यह है कि नर्मदा डैम के अंदर गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के लोगों को डैम बनने की वजह से बसाया गया है। सर, वैसे भी इस देश के अंदर ज्यादा से ज्यादा डेवलपमेंट का विक्टिम अगर कोई बना है, तो वे इस देश के आदिवासी हैं। इनकी करीब साढ़े आठ परसेंट पॉपुलेशन है। फॉरेस्ट पॉलिसी की वजह से वहां से जंगल काटे गए, उनके पास जंगलों का कोई अधिकार नहीं रहा और उनको वहां से बिल्कुल अलग कर दिया गया। इसी तरह से देश में जितने भी मेजर डैम्स बने हैं, उन डैम्स के अंदर जितने गांव गए हैं, उनकी जमीनें गई हैं, वे सभी आदिवासी इलाकों के अंदर गईं। यहां पर भी किसी स्टेट का मसला उठा था, जिसके अंदर पूरा मुआवजा नहीं दिया गया है। अगर डैम में पानी भर जाएगा, तो लोग अपने आप वहां से छोड़कर चले जाएंगे, ऐसी स्थिति का निर्माण हुआ। सर, नर्मदा डैम के तहत आदिवासियों को बसाने के लिए एक लम्बी लड़ाई चली थी। उसके अंदर नर्मदा ट्रिब्युनल और गुजरात सरकार ने रिहेबिलिटेशन और रिसेटलमेंट का पूरा पैकेज नर्मदा के लोगों को दिया था। सर, 19 गांव के लोगों को गुजरात के अंदर बसाया गया था, जिनको रिसैटलमेंट और रिहेबिलिटेशन पैकेज के तहज जो 5 एकड़ जमीन दी गई थी, उसी में से दो एकड़ जमीन वापस एक्वॉयर की गई। अभी तक उनके पास 3 एकड़ जमीन है। ये लोग 15 तारीख से रिसैटलमेंट ऑफिस के सामने प्रोटेस्ट कर रहे हैं, वहां बैठे हैं। न उनकी बस्तियाँ बसाई गईं, न उसमें रोड़ बनाए गए। प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के हिसाब से भी वहां पर रोड बननी चाहिए थी। वहां पीने के पानी की भी सुविधा नहीं है। रिसेटलमेंट पैकेज के अंदर उनके बच्चों को नौकरी दी जाएगी, ऐसा कहा गया था। उनको या तो कैचमेंट एरिया के अंदर बसाकर पानी की और सिंचाई की व्यवस्था की जाएगी। वैसा भी उनको बताया गया था। लोग अपना घरबार, जमीन सब छोड़ कर बिल्कुल नई जगह के ऊपर आकर बसे हुए हैं। इसके अंदर सरकार का खास करके गुजरात सरकार का जो pathetic एटिट्यूड है, उसकी मैं भर्त्सना करता हूं, क्योंकि डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के अंदर सबसे ज्यादा सेक्रिफाइस जिस किसी ने भी किया हो, इस देश की आदिवासी पॉपुलेशन ने किया है और इसके प्रति हमारी बिल्कुल सेंसेटिविटी नहीं है, ऐसा मेरा मानना है और सरकारों की ओर से बहुत सी जगहों पर ऐसा देखा गया है। उनकी जमीन भी जाती है, सब कुछ चला जाता है, उसके बावजूद भी वे कुछ नहीं कर सकते। मेरी गुजरात सरकार से और आपसे मांग है कि इनकी जितनी भी मांगें पैकेज के अंदर दी गई थीं, वे सभी मांगें पूरी की जाएं, उनको अच्छी तरह से बसाया जाए, ताकि उनको कुछ न्याय मिल सके।

श्री पी.एल. पुनिया (उत्तर प्रदेश): सर, मैं इस विषय के साथ स्वयं को संबद्ध करता हूँ।